P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11*(Part-1) February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

बैराठ में बौद्धावशेष : एक विश्लेषण

सारांश

विराटनगर जयपुर से उत्तर दिशा में प्रायः 66 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है। यह लगभग आठ किलोमीटर लम्बी तथा छः किलोमीटर चौड़ी एक घाटी में अवस्थित है। पास में अनेक पर्वत पंक्तियाँ फैली है, जो लाल रंग की है और ताम्र धातु के लिए प्रसिद्ध है। जिस घाटी में यह नगर अवस्थित है, इनमें दो नाले अपना जल यहा लाते हैं। इनमें एक नाला बैराठ नाला और दूसरा बादराल नाला कहलाता है।

बैराठ नगर का इतिहास अतीव प्राचीनकाल तक जाता है। प्राचीन भारत में यह मत्स्य 'छठी शताब्दी ई.पू. में यह मत्स्य महाजनपद की राजधानी का नेतृत्व करता था। इसी नगर में पाण्डवों ने छद्म रूप धारण कर एक वर्ष का अज्ञातवास का समय बिताया था। आज भी सुदृढ़ परम्पराएँ तथा स्थान है जो पाण्डवों की स्मृति से जुड़े हुऐ हैं। यहाँ भीम की डूँगरी, बाणगंगा जिसे अर्जुन ने अपने बाण से उत्पन्न किया था। पाण्डवों के साथ इस स्थान के सम्पर्क की कथा का ऐतिहासिक आधार महाभारत में आए प्रसंग है।

मुख्य शब्द : महाजनपद, बौद्धवशेष, मत्स्य, सुदृढ़, परम्परा।

महिपाल यादव
शोधार्थी,
भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

प्रस्तावना

विराटनगर पुरातात्विक सामग्री से भी ओत–प्रोत यह उत्तर भारत में कृष्ण मार्जित मृदापात्र परम्परा वाली सभ्यता का एक सबल प्रतिनिधि है। यहाँ पाषाणकालीन उपकरण एवं औजार, आदिम कालीन शैलचित्र, सिक्के तथा तीसरी शताब्दी पूर्व से लेकर पहली शताब्दी ई. तक के बौद्ध सभ्यता के अवशेष जिनमें अशोक के अभिलेख, गोल मंदिर, मठ आदि शामिल हैं। इस प्रकार यह स्थल पाषाणकालीन और प्राचीनकालीन पुरातात्विक स्त्रोतों से भरपूर है तथापि इसका महाभारत कालीन सम्पर्क और बौद्धयुगीन सम्पर्क इस स्थान को विशेष महत्व प्रदान कराता है।

यही नहीं मध्यकाल में यहाँ मुगलों द्वारा एक टकसाल भी खोली गयी थी जहाँ ताँबे के सिक्के ढलते थे। मुगल बाग, ईदगाह, मुगल बाग का विशाल द्वार, पंचमहल आदि स्मारक यहां विद्यमान है। इस बात की प्रबल संभावना है कि यह अकबर के काल में पुनःस्थापित हुआ था।

इस नगर के प्रारम्भिक खोज का कार्य कनिंघम, कार्लाइल और डॉ. भण्डारकर ने प्रारम्भ किया था, जो सन् 1865 तक चलता रहा। कार्लाइल और भण्डारकर द्वारा किए गए कार्य सन् 1909–10 में सम्पन्न हुऐ थे जिनका वर्णन उनके यात्रा विवरणों में प्रकाशित है। इनके पश्चात् इस स्थान पर मिली प्राचीन सामग्री से उत्साहित होकर तत्कालीन जयपुर राज्य ने प्राख्यात् पुराविद रायबहादुर दयाराम साहनी को इस कार्य पर लगाया, जिन्होंने 1937 ई. में विराटनगर में बृहत स्तर पर उत्खनन कार्य करवाया।

वर्तमान में बैराठ नगर जयपुर जिले की बैराठ तहसील का एक भू–भाग है। प्रस्तुत शोध पत्र में यहां बौद्धयुगीन संस्कृति के अवशेषों का विश्लेषण किया जायेगा।

अशोक के अभिलेख

उत्खनन से पूर्व विराटनगर में सम्राट अशोक का मौर्यकालीन लघु पर्वतीय लेख खोज निकाला गया था। यह बैराठ चट्टान अभिलेख रूपनाथ सामाराम अभिलेख का एक त्रुटित रूप है। इसका पता कार्लाइल ने सन् 1871–72 में लगाया था। यह बैराठ से एक मील दूर उत्तर–पूर्वी भाग से प्राप्त हुआ था। यह लेख एक अलग–अलग चट्टान पर खुदा हुआ था, जो भीम डूँगरी के नीचे की ओर थी। खुदा हुआ खण्ड 17 फीट ऊँचा और पूर्व से पश्चिम 24 फीट लम्बा है। उत्तर से दक्षिण यह 15 फीट है। इस लेख का सम्पादन डॉ. बहुलर और सेनार्ट ने किया था।

इसके अलावा बैराठ चट्टान अभिलेख भी यहां प्राप्त हुआ है। यह शिलालेख अब एशियाटिक सोसायटी बंगाल, कलकत्ता में सुरक्षित है। इसका

पता बैराठ के पास की पहाड़ी पर सन् 1840 ई. में कप्तान बर्ट ने लगाया था, जबकि कैप्टन किटोई ने इसका लिथेग्राफ तैयार किया एवं लिप्यन्तरण एवं अनुवाद किया। इसका नाम भाब्रू लेख भी है। यह बैराठ के बीजक की पहाड़ी से प्राप्त हुआ था। भाब्रू बैराठ से 12 मील दूरी पर अवस्थित एक साधारण सा गाँव है। बैराठ से निकलने के बाद पहला गाँव होने से संभवतः भूलवश केप्टन बर्ट ने इस स्थान के आधार पर इस लेख को भाब्रू अभिलेख से अभिहित कर दिया। अशोक के दो महत्वपूर्ण शिलालेख मिलना इस नगर की प्राचीनता और उसके महत्व को प्रकट करता है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य बैराठ में बौद्ध संस्कृति के अवशेषों का मूल्यांकन करना है।

स्तुप/वर्तुलाकार बौद्ध मंदिर

श्री दयाराम साहनी ने बैराठ की बीजक पहाड़ी पर अपना उत्खनन कार्य प्रारम्भ किया, जिसकी महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में वर्तुलाकार बौद्ध मंदिर के अवशेष भी प्राप्त हुए। इस मंदिर के स्तम्भ काष्ठ निर्मित थे। मंदिर स्थापत्य की दृष्टि से इष्टिका निर्मित है जो मौर्ययुगीन स्थापत्य का अनुपम उदाहरण है। यह चार दीवारी से घिरा हुआ है। यह दीवार 12 इंच मोटी इंटों से बनी है। इसके अन्दर गोलाकार मंदिर का व्यास 27 फीट 2 इंच का है। दीवारों में जो इंटे प्रयोग में लाई गई है उनकी आकृति 20'' x 10½ x 3'' है जो मौर्य कालीन है। इस मन्दिर की दीवार के नीचे की तरफ बुद्धकालीन अक्षर खुदे या लिखे हुए हैं। जैसे वातम, वी, कुप, कामा, वास्त आदि, जिनसे प्रकट होता है कि जगह–जगह बुद्ध धर्म के उपदेश का प्रचार–प्रसार लिख–लिख कर किया जाता था, अशोककालीन कलकत्ता शिलालेख इसका पुष्ट प्रमाण है।

बौद्ध मठ

बीजक की पहाड़ी पर प्राचीन बौद्ध स्मृति चिह्न दो चबुतरों पर विभाजित है। एक ऊपरी और दूसरा नीचे का चबूतरा है। दोनों तक पहुंचने के लिऐ सीढ़ियां बनी है। ऊपरी चबुतरे पर अशोक के समय का एक बौद्ध मठ बना हुआ था। इस मठ का सर्वाधिक सुरक्षित भाग पूर्व दिशा में हैं जहां कोठरियों की एक दुहरी पंक्ति है। इनकी त्रिअंकी छतें जली हुई लकड़ी और मृदा निर्मित टायलों में आच्छादित थी। प्राप्त अवशेषों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि ये भिक्षु–भिक्षुणियों के रहने की कोठरियाँ थी। प्रसिद्ध चीनी यात्री हेनसांग 634 ई. में बैराठ आया था। उसने यहाँ आठ बौद्ध मठ देखे थे।

शंख लिपि

बैराठ की पहाड़ियों में ऐसी कन्दरायें मिली हैं जिनमें एक रहस्यमय लिपि उत्कीर्ण है। इस विधि को अभी तक पढ़ा नहीं जा सका हैं। इस लिपि के लेख बड़ी संख्या में बीजक की पहाड़ी, भीम की डूंगरी में बनी गुफाओं में अंकित हैं। इन लेखों के अक्षर शंखाकृति के हैं। इतिहासकारों को इस लिपि के अभिलेख भारत के अतिरिक्त भारतीय 34 महाद्वीप के अन्य देशों इण्डोनेशिया, जावा तथा बोर्नियों में भी मिले है। भारत में शंख लिपि के अभिलेख उत्तर में जम्मू–कश्मीर के अखनूर से लेकर दक्षिण में सुदूर पूर्व में पश्चिम बंगाल के सुमुनिया से लेकर पश्चिम में गुजरात के जूनागढ़ तक उपलब्ध है।

अन्य

नृत्यरत यक्षिणी की मूर्ति

एक यहां नृत्यरत बाला या यक्षिणी की मूर्ति जिसका सिर और पैर गायब है, प्राप्त हुई हैं। इसका बायाँ हाथ कूल्हे पर है और दाहिना हाथ वाम स्तन को संभालने के लिए छाती पर है। यह मूर्ति जो नग्न रूप में है तीन लड़ी की मणको की माला कमर पर धारण किए हुए है। ऐसी ही मूर्तियाँ मथुरा में रेलिंग के स्तम्भों पर मिली है जो ईसा पूर्व प्रथम शती की है।

मृण्मय मूर्तियाँ

मौर्यकालीन मृण्मय मूर्तियाँ इनमें सर्पफन, धूप दान, धूप की बत्तियों के लिए बने छिद्र युक्त मृद वस्तुएँ, नर्तकी एवं यक्ष की मूर्तियाँ व मृदा निर्मित बेसबल जिस पर कटहरे का अंकन है आदि है।

मृदपात्र

मृदपात्रों में अलंकरण युक्त पात्र भी मिले है, जिनमें भिक्षा मांगने का सुन्दर नक्काशीदार प्याला प्रमुख हैं। अन्य मृदा पात्रों के अलंकरण में चक्र पर त्रिरत्न और स्वाप्तिक के प्रतीरूप लगे थे। यहां से मौर्यकालीन चमकीली मिट्टी के पात्र भी उपलब्ध हुए हैं जो एन.बी.पी. के नाम से ज्ञात है।

पोलिश वाले स्तम्भ

ये चुनार पत्थर के बने मौर्ययुगीन स्तम्भ थे, जिनका प्रयोग स्मारक निर्माण में होता था।

निष्कर्ष एवं सुझाव

विराटनगर से प्राप्त अभिलेखों की तिथि तीसरी शताब्दी ई. मानी गई है। एक लेख में चैल–चैलग पढ़ा गया है जिसे संस्कृत का शैल चैत्यग माना गया है। इसका अर्थ होता है ''पहाड़ी पर स्थित चैत्य'' इससे अनुमान लगाया गया है कि ईसा की तीसरी शताब्दी में यहां कोई पहाड़ी बौद्ध चैत्य था। मौर्य सम्राट अशोक के भाब्रू या बैराठ अभिलेख इसी स्थान से मिले है। इनमें भी विशेष बात यह है कि केवल यहां से प्राप्त अभिलेख में ही अशोक ने अपने आप को बौद्ध धर्म का अनुयायी बताया है। बैराठ के दक्षिण–पश्चिमी कौने पर बीजक की पहाड़ी या शिलालेख वाली पहाड़ी है जो भीलवाली घाटी पार करते हुए प्रत्येक पथिक के लिए लांघनी जरूरी है। कभी–कभी यह घाटी अन्तर्राष्ट्रीय पथ पर पड़ती होगी तभी अशोक महान ने यहां अपना प्रसिद्ध लघु लेख खुदवाया था।

अब तक उत्खनन व परीक्षण के पश्चात् जो तथ्य सामने आये है वे इस बात को पूर्णतः प्रमाणित करते है कि बैराठ का स्थान बुद्ध धर्म के अनुयायियों के लिये महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल रहा है। सम्राट अशोक का इस क्षेत्र के प्रति इतना लगाव था कि उसने बुद्ध धर्म से सम्बन्धित सभी वस्तुओं का इसे संगम स्थल बना दिया। अशोक महान ने यद्यपि अपने धर्म प्रचार के लिए कहीं पर अशोक स्तम्भ निर्मित करवा दिये, कहीं पर बौद्ध स्तूप, तो कहीं पर प्रस्तर लेख, परन्तु इस स्थान को अतिविशिष्ट मानते हुऐ यहां अशोक शिलालेख, बौद्ध स्तूप, गुहा–गृह, श्रावक गृह आदि निर्मित करवाये। अशोक ने बुद्ध के अस्थि

अवशेष भी यहां पूजार्थ स्थापित करवाये तथा स्वयं ने अपने जीवन का बहुमूल्य एक साल इसी स्थान पर रहकर साधक के रूप में व्यतीत कर अपने आपको धन्य माना। बैराठ की खुदाई के संबंध में रायबहादुर साहनी ने लिखा है कि – इस खुदाई की विशेषता इस बात में है कि हम यहां बुद्ध की एक भी प्रतिमा नहीं पा सके अतः यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि ईसा पूर्व की दूसरी सदी तक बुद्ध की मूर्तियाँ बननी शुरू नहीं हो पायी थी। साथ ही यह स्थान हानच्वांग के 'पोलीयेटोलो' से भिन्न भी प्रतीत होता है क्योंकि उसे 8 नहीं केवल 1 ही मोनेस्ट्री के अवशेष मिले हैं। अतः आस–पास की पहाड़ियों पर और अन्वेषण करना आवश्यक है। शंख लिपी के बारे में भी अनभिज्ञता विद्यमान है। यद्यपि वर्तमान में ये अवशेष मात्र रहे है, फिर भी ये अवशेष अपने स्वर्णिम अतीत की कहानी स्पष्ट सुना रहे है।

1. बैराठ बौद्ध धर्म की सांस्कृतिक राजधानी रही थी। आजादी से पूर्व यहां देश के प्रमुख पुरातत्त्ववेताओं ने यहां अन्वेषण किया, परन्तु उसके पश्चात् यह स्थल उपेक्षित रहा।
2. बैराठ से प्राप्त बौद्ध अवशेषों को संरक्षित करने के भी आशातीत प्रयास नहीं किये गये।
3. थीम आधारित पर्यटन परिपथों के निर्माण की हाल ही की योजना (स्वेदश दर्शन) कै बौद्ध सर्किट में बैराठ को शामिल किया गया है, अतः यहां बौद्धावशेषों को संरक्षण प्रदान करना आवश्यक हैं।
4. यहां पर्याप्त आधारिक संरचना का पर्यटन विकास के दृष्टिकोण से विकसित करने की भी महत्ती आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Excavation Bairath by Dr. Dayaram Sahni.*
2. *Archeological Survey of India, Report 31 March, 1990.*
3. *तोरावाटी का इतिहास, डॉ. महावीर प्रसाद शर्मा, लोकभाषा प्रकाशन समिति, कोटपूतली, 1980.*
4. *जयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, डॉ. मोहनलाल गुप्ता, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2015.*
5. *Archeological Report, Part-2, 6 by Carlyle.*
6. *रीता प्रताप, बैराठ के भित्ति चित्र, मरूश्री, जुलाई–दिसम्बर, 1980, वर्ष 9, अंक 4, वर्ष 2010, अंक 1.*
7. *राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स – सावित्री गुप्ते, राजस्थान सरकार, 1987.*
8. *ढूँढाड़ : संस्कृति और परम्परा, झूंथा लाल नाड़ला।*
9. *मत्स्य जनपद क्षेत्र की कला एवं पुरातत्व, वैभव शर्मा, लिटरेरी सर्किल, जयपुर।*
10. *राजस्थान के प्राचीन नगर, डॉ. राघवेन्द्र सिंह मनोहर, पत्रिका प्रकाशन 409, जयपुर, 2010.*
11. *मत्स्य–संघ का पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक इतिहास, सी.एल. शर्मा, मालती प्रकाशन, जयपुर, 1993.*